मुट्ठी भर उजियाळौ

संजय आचार्य 'वरुण'

शशधर प्रकाशन
14/161, मुक्ता प्रसाद नगर, बीकानेर



राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी
बीकानेर रै आंशिक आर्थिक सैयोग सूं प्रकाशित

पुस्तक : मुट्ठी भर उजियाळो
संस्करण प्रथम : 2003

प्रकाशक :
शशधर प्रकाशन
14/161, मुक्ता प्रसाद नगर,
बीकानेर 334 001

आवरण : रवि शंकर आचार्य
मूल्य : सौ रूपये
मुद्रक : जनसेवी प्रिन्टर्स, दाऊजी मंदिर भवन, बीकानेर
दूरभाष : 200495

शब्द संयोजन : एस.एस. कम्प्यूटर्स, बीकानेर

Muthi Bhar Ujiyaro (Poetry) by Sanjay Acharya 'Varun' Rs. 100.00/-

'मुट्ठी भर उजियाळो' देख'र...........

शब्दों की ध्वनियों के अनुशासन का निर्वाह करते हुए 'वरुण' को पहली बार सुना तो मैं ठिठक गया था, सोचा, इस तरह कई बार ठिठकूं, सीधे संवाद की मेरी पहल पर एक ओर पीढ़ी का अन्तराल आखड़ा हुआ तो दूसरी ओर मेरी यायावरी...... आज बोई 'वरुण' म्हारै सामैं है, म्हनै वेरी बंद मुट्ठी सूं आखरा री उजास छणीजती दीसै। देखतां-देखतां ई सुणन लागूं- 'ए म्हे आखर रचणिया हाथां ऊपर निपाट ऊघड़ै बी सूं पैल थे ई उजास ऊन-ठर'र एक ओळियो मांड'र बताओ कै 'मुट्ठी भर "उजियाडै" रै आखरां री रंगत कोरी सफेद झक्क है कै सूरज री गायां रा सात रंग भी भळकै......

कहावर कमतरिये रौ अपणाणौ कै आपरै आखरां रै उजास री जातरा करण रौ अवसर दियौ, ईं उजास में म्हनै गांव री सून्याड़, सैर री भागम-भाग, मसीन, पुरजा तो दीस्या ई, ई मेंई गाव री गंवई री परोटण भी लागी, सैर रै अळूजाड़ में नाता-गिना नै सुळजावता जतन भी बोलता सुणीज्या।

'वरुण' नै पैलीवार तो पोसवाळ-विद्यापीठां सू सीख्योडी भासा में सुणियौ, आज रै दिन आचळ री छिंया में सींचीजी बोली ने अरथाऊ भासा रौ रूप रच'र लायो है, म्हें म्हारी बाथां तो खोलूंई।

उजास में अधारो भोगतो अर अंधारे में उजास खोजतो 'वरुण' आसा-पास खोजतो खुद नै भी खोजण-पिछाण रा जतन करै 'वो कूण है', 'हूँ कूण हूँ' 'ए-वे-सै' न्यारा-न्यारा है' कै इकजा। उत्तर-पडूत्तर सोधतो 'वरुण' एकल सुर में अजान-झालर सुणै। सुण-सुणंतो मानखै रै धरम रौ पैलो अ माडै। मांडतौ-माडतौ दीयावाती तो देखैई। अठै बो आ भी मानलै कै जंगळ रै गूंगे अंधारे में चालाणौ चींत्योड़ै बटाऊ रै हीये में धानणौ तो होसीई। आपरी जागती 'लालटेण' नै बुझावण में भी संको नीं करै। 'वरुण' री आ पड़ताल सरावणजोग है कै कांच रै सामै होण रौ आपरौ डर समेट'र उजास रै झुटपटे में सामली आख्यां में देख भी लै और देखाय भी दै। ए कवितावां एकल रूप में आपरौ अर्थ बतांवती आ तौ कैई जावै कै - "म्हां आखरा में निजूपणै री पिछाण समाजू सरोकार रै लारै चालै......." ई पाठक रै हियै भी आ बात जमै कै आपरै आखै बार नै आपरै माय समोवतो ई

तो आपरै निजूपणै ने परखै, – तो ले - परोटेई रै पेटे ई सबद रचना-रूप धारण करै।

'वरुण' जिकै हेमांणी आंगणै में रेवै-सोवै भळे आपरै मायली पुरता नै खोलै, वठै तीन सईका एक सागै जूण रा कळाप करता दीसै। बारी छिया तो आ आखरां में छब-छबती लागै, वरुण नै ठा ही कैला कै आथूणै कूआं गैरा खुदै, जणै कठैई जा'र पांणी सूं बारो भरीजै, ईं खातर उतार-खिंचाण री मारण मोकळी लांबी राखणी पड़ै.....अणी सागै "आयौ.....आयौ...." रा सुर भी गूंज्या करै।

'वरुण' री दीठ री डोर लांबी होवै, वा मिनखाजूंण रै सांच री गुफाआं में घुणीजता-तणीजता अणूंजा नै छूए ई नीं, आपरै आखरां रे वारे में भर-भरती तावडे लावे, इण सारू कामना, म्हारो घणी-घणी हेत म्हनै भरोसो है कै आखरां री राग में आपरी होनणो परोटता 'अना कारीगर' 'मुट्ठी भर "उजियाळो" में आज रै सागै-सागै अगम भी भाखसी

पोथी री रूप लेण सूं पैला आ पांनां रे सिरे-पेटे री जातरा री सुख म्हें अवेर राख्यो है – 'वरुण' रै वास्ते म्हारी ओर सूं चरैवेति....चरैवेति......

– हरीश भादानी
छबीली घाटी, बीकानेर

म्हारी बात

आज आपरै हाथां में 'मुट्ठी भर उजियाळौ सूपतां थकां म्हनै भी हरेक सिरजक री भांत घणी उमाव हुय रह्यौ है पण साथै साथै म्हारै मन में आ बात आ रह्यी है के म्हैं जिण अपार उजास री अडीक में ओ 'मुट्ठी भर उजियाळौ' रच्यौ है वो कदे आसी भी या फगत आपां री कलम सुपना री स्याही सूं कागद सजावती रैसी। उजास या उजियाळौ ही जिनगाणी रौ सकारात्मक पख है, इण शब्द री सबसूं मोटी विशेषता आ ही'ज है के ओ हिरदै में आत्मविश्वास थरपण आळौ शब्द है। म्हनै लखावै के उजियाळौ एक इसै विश्वास रौ नांव है जिकै रै दम पर एक छोटो सौ दिवलौ अपार अंधारै सूं सदा ई लड़तौ रैवे अर हमेशा साबित करै के पहाड़ जितरै अंधारै ने मेटण सारू पगत एक मुट्ठी उजियाळौ घणौ है। आपां जाणां हां के जीवण रै हरेक पख में उजियाळौ अर अंधारौ हुवै। म्हैं इण रचनावां में उजियाळै अर अंधारै ने भांत भांत री दीठ सूं देखण री कोशिश करी है। म्हनै लखावै के आपां रै बखत रौ हरेक क्षेत्र घोर अंधारै री चपेट में आयोड़ो है। राजनीति, शिक्षा, संस्कृति पर छायोड़ै अंधकार सूं मिनखा पणौ, नैतिकता कर्तव्य अर ईमानदारी जिसी केई चीजां ओझळ हुयगी है अर कीं हुवती जाय रैयी है। आपां नै आपां रै हिरदै रौ अंधकार मेट'र इण जुग ने पाछौ उजास सूं भरणौ चाहिजै। आपां मांय सूं एक एक मिनख एक एक मुट्ठी उजियाळौ लै'र निकळसी तो इत्तौ उजास हुय जासी के विकराळ सूं विकराळ अंधारै रौ अस्तित्व भी हिल जासी।

ओ 'मुट्ठी भर उजियाळौ' संसार रै किणी भी तरै रै अपार अंधारै रै एक कतरै ने भी मेट सक्यौ तो म्हैं इण रै सिरजण ने सारथक समझूंला।

म्हारै मन में सिरजण री उजास थरपण आळा म्हारा सिरजक श्री गौरीशंकर जी आचार्य 'अरुण' म्हारा आदर्श कवि, आदर्श शिक्षक अर आदर्श पिता है. इण पोथी रौ प्रकाशन इयां रै मार्गदर्शन अर आशीर्वाद रौ सुफळ है अर सागै ई वडा भाई श्री हरीश बी.शर्मा री भूमिका रायत म्हारै सूं भी ज्यादा महताऊ रैयी है आदर जोग श्री हरीश भादाणी जी अर श्री चाँदरतन जी आचार्य ....रो हाथ भी म्हारै सिर माथै रैयो है। भाई श्री कुलदीप जनरोवी जी री मैणत अर सैयोग सूं आज 'मुट्ठी भर उजियाळो' आप रै हाथां में है।

- संजय आचार्य 'वरुण



ममतामयी माँ स्व. श्रीमती जमना देवी आचार्य रै
चरणां में सादर अश्रु सहित.........

विगत

दरसाव थारै जी रौ

कदे कदे
जद म्हैं थारै
नैड़ो आय'र
म्हारी आंख्यां बन्द करूं
तो म्हनै दीसै
दरसाव थारै हिरदै री
इयां लागै
जाणें एक पांखी
फड़फड़ीजती
ठानीं क्यूं छटपटायती
बिना सगती रै
बार बार खड़ी हुय
चक्कर काटती
एक सूखै ठूंठ री।
फेर पड़ जांवती
घणी ताळ
ठूंठ रै ऊपर
घूमतां घूमतां
अचाणचक
तड़ाछ खाय'र
आय पड़ै नीचै
धरती पर, अर कीं देर बाद
हुय जावै
एक दम शांत
फेर नीं काटै चक्कर
बो ठूंठड़ै रै च्यारूमेर

म्हैं उण वखत
थारै हिरदै री दरसाव
देखणो वन्द कर
देखण लाग जावूं
थारै मूण्डै खांनी
क्यूं के उण वखत
झरता हुवै आंसू
थारै नैणां सूं
टप...टप...टप...।

म्हारौ आधार

जमीं पर रैय'र
वात करणो नीं जाणूं म्हैं
म्हनै आछो लागै
हवा में उडणो।
इण खातर ही
कदे खिसकै कोनी
म्हारै पगां हेटली जमीं।
म्हैं ठोकर खाय'र
कदे नीं पड़ियौ।
क्यूं के
हवा में भाठा नीं हुवै।
म्हैं म्हारै पगां ने
कष्ट नीं देवूं
हवा चलावै म्हनै
हवा उडावै म्हनै
इण खातर
थकणै अर थमणै री तो
वात ही कठै आवै।
म्हैं हवा में उडू, पण
फेर भी म्हैं
आधार हीन कोनी
क्यूं के
जिण हवा में म्हैं उडू
उण री जड़ां
समायोड़ी है
इण जमीं में घणी ऊंडी
ठेठ मांय।

पिछाण

म्हैं थनै
कीं भी नाम देवणों
ठीक नीं समझूं
क्यूं के
तू आज खड़ी है
म्हारै सामीं
एक अणबूझी आडी बण'र।
म्हनै इचरज है के
म्हैं क्यूं नीं सोध पायौ
अबार ताई
थारौ उत्तर।
जद कदे लागै है म्हनै
के अबै तो
म्हैं थारै नैड़ो हूं
तो निजर आवै
थारै अर म्हारै विचाळै
एक लाम्बो फासलौ।
म्हारी अणबूझी आडी!
ज्यूं-ज्यूं
म्हैं थनैं सुळझाऊँ
तू है के
औेर उळझती जावै।
पैला म्हैं
कांच सामीं

जावण सूं डरती
आज भी घवराऊँ
पण अबै
खुद ने देखूं
कांच में नीं
थारी आख्यां में।
तू कांई है?
म्हैं तो क्या
तू खुद भी नीं जाणें।
म्हैं सोचूं के
तू खुद ने
बांध राख्यौ है
एक छोटी सी सीमा में।
म्हनै लागै
के थनै चाहिजै
खुलीपण अर सुतन्तरता
पण थारै काळजै
वा हिम्मत नीं है
जकी तोड़ सकै
थारै खुद रा
गांध्योड़ा वधन।
तू आपोआप खींची है
आपरै ही ध्यारूमेर
लाम्बी लिछमण रेखा
अर इण रेखा में
रावण तो क्या
राम भी नीं आ सकै।
तूं म्हारै सूं उम्मीद मत राख।
जद तू आप ही
पग नीं उठादै

तो म्हैं किण तरै लांघू
थारी सीमावां।
म्हारी बात मान
एक मिनख साइनै
कांच सामीं जा
अर देख, निरख
के तू वो नीं है
जकी तू
खुद ने जाणैं, समझै।

नैणां में तिरै सुपना

म्हारै हियै जियै रै
आसै पासै
भणभणावै
म्हारा सुपना
म्हारी इच्छावां।
म्हारी आख्यां मैं
पाणी मे तिरता सुपना
कदे डूब जावै
कदे तिरता दीसै।
इसा सुपना
जका
काळ रै नावड़ै सूं
बदरंग हुयोड़ै
कपड़ै ज्यूं
काळजियै में
उठण आळी
काळी पीळी आंधी में
फगत लैरावै
उड नीं सकै
तणीं सूं
बंध्योड़ा हुवण रै कारण।
नैणां रौ पाणी
वैवतो वैवतो
कदे न कदे तो सूखै ईं'ज
अर सुपना हुय जावै

सूखो खेलरौ
वण्योड़ा सुपना ने
कदे न कदे
उडा'र ले जावै
तेज फून गै लैरका
आपरै सागै
ना जाणे कठै
किण ठौड़?

पगलिया

घूमतौ घूमतौ
निकळ'र आयग्यो हूं
गांव सूं खासी दूर
धसतै पगां सूं
दोरी दोरी चालतौ
न जांणें
काई सोध रह्यो हूं।
चालतै चालतै
अचाणचक
इण रेत में
म्हारा पग क्यूं थमग्या
म्हैं मुड़'र देख्यौ
खासी दूर
जठै तांई निजर आवै
थठै सूं ले'र
अठै तांई
रेत रै समदर पर
मण्ड्योड़ा दीखै
म्हनै म्हारा पगलिया।
अचाणचक
निजरां ऊपर गई
आभौ है, पण वो
आसमानी नीं है
सोनलिया आभौ
सोनलिया धरती।

इण दोनां रै विचाळै
फगत म्हैं, और कोई नीं
दूर दूर
ठेठ तांई दीखै
रेत रौ समदर
मिनख री इच्छावां ज्यूं
फैल्योड़ी रेत।
भूलो चाल पड़्यौ हूं
क्यौं सोच'र
पगां रै वै सो
सैनाणां माथै
जका मण्ड्या हा
आपनै वखत।

आ बीमारी नीं है

म्हैं नी जाणूं
के तळाव रै सङ्योड़ै
अर गिन्दलै पांणी में
कीं धखत
लैरावतै रैयण सूं
म्हांनै क्यूं लागै
के जाणें सौ कीं पा लियौ हुवै
अर ठा नीं क्यूं
इयां लागै
के विरखा में भीज'र
म्हे कर रह्या हां निभाव
माइतां री
किणी परम्परा री।
अबै सायत आप जाणसौ
के आ कोई
दिमागी बीमारी है
नई सा आप गलत जाण्यौ
म्हे पूरी सायचेती में करां आ बात
क्यूं के म्हे करणी चावां
विरखा अर तळाव रै
हुवणै ने सारथक।
आप नीं मानौला

के म्हे तळाव रै तळै में
वार वार जाय'र सोधा वो
जको वठै नीं है
अर हुय भी नीं सकै।
या विरखा में भीज'र
म्हानै वो आनन्द आवै
जको स्टैनलैस स्टील रै
फव्वारै में
आवणी चाहिजे
वो ही'ज फव्वारो
जकै ने आपरै
न्हावण घर में लगायण री हिम्मत
नीं जुटा पायो है
म्हां मां सूं
कोई भी ओजूं तांई।
आप ठीक कैवो
के सूगळै पाणी सूं
खाज खुजळी
पचिया फोड़ा हुय सकै
अर तळाव में तो
किण 'चीज' री कमी हुवै?
आप री वात सिर माथै
के घर रो पाणी हुवै
सांतरो, निरमळ
अर निरोग
साथै ही मीठो भी
पण हर रोज नीं तो
कदे कदास

[illegible] बिरखा
बण जावै
म्हांरी कमजोरी।
अरदास है
बुरौ ना मान्या
म्हे बिरखा में भीजसां
तळाव में न्हांसा
बस।

जिनावर

म्हारे हाथां री ताकत
भेळी हुय
जाय वसी
म्हारे माथै में
अर उछाळा मारै
घड़ी घड़ी, छिण छिण
धठीठा आवै
दिमाग री नाड्यां नै
आपरी ताकत
अजमावण सारू।

म्हारी सोच रै
आसै पासै
घेरा घालै
केई काळा माछर
कानां री फेरी काढ़ती
माख्यां री
भणभणाट नै
अणसुणी करणी चावूं
पण कर नीं पावूं।

म्हारी दिमागी ताकत में
लपटीजियोड़ा
केई ऊंदरा
म्हारै आदररां

म्हारै असूलां
म्हारी सभ्यता
म्हारी संस्कृति
अर म्हारै मिनखापणै री
इमारतां री नींवां नै
आपरै तीखै पंजां सूं
कर देवै पोलीफस
खोखली
अर फदे, जद
पड़ जावै
वै इमारतां
भरभराय
उण वखत, म्हैं मिनख
पण जावूं हूँ
मिनख दांई
दीखण आळौ
एक जिनावर।

खुद ने देखणी

अयै आँख्यां ने
देखण खातर
दरकार नीं है
किणी चीज वस्त री।
जद भी उण ने
कीं मन भावणी
नीं दीखसी तो
वा जाणें है
के उण रै आप रै मांय भी तो
वस्योड़ी है एक दुनिया
उण री आप री संसार।
वा उण ने ही'ज देखैला
वा जाणै के
रुं रुं खड़ी कर देखण आळी हुवै
खुद मैं उतर'र
खुद ने देखणी।

साच

साच
कीं ठा क्यू हुवै
इतरो भयानक
अर डरायणी
किणी जंगळी
जिनावर री भांत
निरदयी अर मिनख ख़ायणौ।
म्हारै लारै तो
खास तौर सूं लागोड़ी है
उण वखत सूं
जद सूं म्हारी
चोट लागण लागग्यो।

हाथ लाम्बी जीभ काढ़
दौड़ती आवै
आपरै पंजा ने खुजळावती
म्हारै खानी
जाणें के म्हनै
पकड़ ई लेसी
पण म्हैं
म्हैं कटै कम हूँ
म्हैं तो हवा में उडणों भी जाणूं
म्हैं तो छेड़ू उणने
सांची कैवूं
बड़ो मजो आवै

उण री नकल्यां करण में।

वो गरीब दासियै आळै ज्यूं
देखै म्हनै, पण फेर
रीस खाय
हाथ पग पटकतौ
फूंफाड़ा करतौ
निवळौ होय देखै
आपो आप ने, पूरी
ऊपर सूं लेय'र हेठै तांई।
साच, जिण री आपां वात कर रह्या हां।
उण रै पग हुवै
फगत पग
अर म्हैं उड'र छोड़ सकूं
उण ने घणौ ई लारै के वो
कदे नीं पकड़ सकै म्हनै
अर, ओ ई तो है
सबसूं वडी साच।

कूण है बो

आपरै ही'ज
च्यारूमेर
घूमती बिना रुक्यां
अर, खुद नै ही'ज
देखती
अंजाणी निजरां सूं
इयां लागै के
खुद सूं ही करती हुवै
जांण पिछाण।
रस्तै चैंवती चैंयतौ
रूक जावती
झटकै सूं
घमगूंगी हुयोड़ी।
कदे देखै
ऊँची इमारतां
कदे उडता हवाई जहाज
काळी दराख सड़क्यां
अर कदे
हवा रै लैरकै ज्यूं
आवती जावती
मोटरां गाड्यां
आभै उडता
चिड़ी कागला कबूतर
खंख अर धूंवै सूं
न्हावता रूंख
अर राम जाणै कांई कांई

सौ कीं देख'र
वो देखै
आपो आप ने
उळझ्योड़ी निजरां सूं
केई ताळ तांई।
फेर चालण लागै
आप रै मारग
यो मिनख कूण है?
म्है, तू, वो
या आपां सब।

थारौ सांच

थारी हरेक ने
नापण री कोसिस
घटावै है कद
थारी खुद री।

थारी ऊँचाई पर
जायण री
विना सींग पूंछ री इच्छा
थनै लाय पटकै
ठेठ रसातळ में।

थारी ज्ञान वधारण री
अणमांवती वायड़
थनै दरसावै
परलै दरजै रौ मूरख।

थारी 'साधू' वणन री चाल
पड़ै हमेस ऊँधी
अर तू रैय जावै
फगत एक विलांद।

'कूण?'

जीवन रै हरेक छिण नै
निरखता थकां
अर कदे कदे
खुद नै परखतां थकां
कीं दया रा भाव उपजै
अपणै आप सारू।

कदे जीव हुळसै
के आपां जी रह्यां हां
कदे उठै टीस
के आपां तो
छिण छिण मर रह्या हां।

आभौ चुपचाप
गूंगौ हुयोड़ौ
धरती, घोर निजरां सूं देखती
के सायत उण नै
टा नी पड़े
पण दोनां रै विचाळै
नाग आळै ज्यूं
फण फैलायोड़ौ
एक सवाल
एक आडी
'कूण?'
म्हैं मींचली म्हारी आँख्यां
म्हारै सूं नीं देखीजै

ओ डरावणी दरसाव।
कीं ताळ पछै
म्हारै कानां में
गूंजण लाग जावै
घणी जोर जोर सूं
यो ई'ज भयानक प्रश्न
कूण? कूण? कूण?
प्रश्न अर उत्तर
आपस में करै घमसांण
कीं देर तांई
थाथेड़ी करतां करतां
अचाणचक
चीर'र निकळ जावै
म्हारी काळजी।
म्हैं ओजूं तांई
संभाळ रह्यौ हूँ
म्हारा जखम
म्हारा घाव।

क्यूं वणायौ मिनख

हे परमात्मा
थनै आ काई सूझी?
क्यूं वणा न्हांख्यौ
तू म्हनै एक मिनख।
जे थनै कीं न कीं
वणाणी जरूरी ही हौ
तो तू म्हनै
बजाय मिनख रै
वणा देतौ
एक पत्थर
एक भाठौ।
तू नी जाणें
इण संसार में
भाठौ हुयर रैवण सूं
कीं घणी ओखी है
मिनख हुय'र जीवणौ।
जे म्हैं भाठौ हुवती
तो म्हारै रूं रूं में
दरद नीं वैंवती
अर नीं ही
म्हांरी पोर पोर में
फूटती पीड
भलां ई मारग में पड्यौ
खावतौ ठोकरां
पण, मिनख वण'र
आपरै हेताळुवां री

ठोकरां री दरद
कीं घणी जानलेवा हुवै।

भाटौ वण'र भी
जे भाग कीं ठीकठाक हुंवता
तो किणी कलाकार रै
हाथ लाग जावतो
अर म्हनै भी मिल जावती
थारै दांई
राम या किसन जी री
उणियारौ।

अर नीं भी वणती भगवान
तो भी रूखां रै हेठै
उण रै हेत री
छिया तो मिल जावती।

पण, नीं भगवान
ओ काम तू कांई कर्‌यौ?
म्हनै मिनख वणा दियौ
थनै ना सही
म्हनै घणी अफसोस है।

आस्था

कदै कदै
हिलण लाग जावै
म्हारी आस्था री इमारतां
हर उण घटना रै पछै
जकी म्हारै नीं चावतै भी घटी।

म्हारी आस्था
निबळी कोनी
सबळ है
इणी बाबत या चावै
कै वो ई हुवणो चाहिजै
जको या चावै।
पण हुवै वो ई'ज
जको हुवणो है
अर होणी नै
ना मैं टाळ सकूं
ना म्हारी आस्था
चावै, या कितरी भी
सबळ क्यूं ना हुवौ।

रचाव

कदे कदे
म्हारै मांय री मांय
कीं मथीजे
घुटीजै, अर लागै
के जाणें म्हैं
म्हैं नीं हूँ।
म्हारै रगत में
आवण लाग जावै
कीं गरमास
अर म्हैं भूल जाऊँ
के म्हैं कूण हूँ
आप कूण हौ?
म्हारौ रूं रूं
खड़ौ होय झिंझोड़ै
म्हारी आत्मा ने
म्हारै मन रै मांय
मचै जोर री हाकौ।
कीं ताळ पछै
डील रै मांय री
अफरातफरी हुवण लागै
कीं कीं सावळ
म्हनै लागै के ठण्डी ठण्डी
मधरी मधरी पून
वैवण लाग रैयी है

म्हारै काळजै माय।
री कीं दुख जाणै
सायद, पैला गिराँ
आर म्है
कागद कलम लेर
बैठ गाऊं
कीं न कीं रुणाय राग।

आखर लीला

म्हारी डायरी में
म्हारै हाथां सूं
बिछायोड़ा
आखरां में
कदे कदे
म्हनै दीखै
म्हारी खुद री उणियारी।

कदे कदे
जद आसै पासै
कोई नीं हुवै
तो म्हारै
गीतां अर कवितावां रा
सबद
खूंटा तोड़ाय
बारै आय
हवा में तिरण लाग जावै।

म्हारै कमरै में
आखर ही आखर
जाणें
गोठ मनावण नै
भेळा हुया हुवै
मात्रावां अर व्याकरण रै
छन्द अर 'मीटर' रै
बंधन सूं

मुगत होय
सुतन्तरता सूं
आखर
खूब गफड घालै
नाचै कूदै
अर खेलै
लुकमीचणी
म्हारै ऊपर।

जोर जोर सूं
जांण बूझ
बेसुरा होय गावै
उणीं'ज गीतां नै
जिण सूं
थै निकळ्या है।

मुट्ठी भर उजियाळौ (१)

निजरां सूं कीं कैवणी
मूण्डै सूं कीं
कैवण सूं वती हुवै
असरदार
म्हैं सीखग्यौ।
म्हैं जाणग्यौ
के रात रै अंधारै में
न्हायोड़ी धरती
जे चंदरमा सूं मांग लेवै
मुट्ठी भर उजियाळौ
तो चंदरमा
मूण्डौ फेर'र खिसक जावै
अर घणी वार
वो ई चंदरमा
दिन थकै ई आय धमकै
धरती री छाती पर
अणमांयती
उजियाळौ ले'र।

मुट्ठी भर उजियाळौ (२)

तू आय पाछी
थारै जाणै सूं
म्हनै लखावै की खाली खाली
थारी हंसी रै ठहाकै मांय
म्हनै सुणीजता
जिनगाणी रा गीत
थारौ म्हारै खनै
आवणौ लागतौ जाणै
पृथ्वी काळ रैयी हुवै
सूरज री फेरी
अर दिन रात रौ बणनौ
जाणै थारै कारण ही
हुय रैयो है।
थारै सामीं
घणी बार भरीजी
म्हारी आंख्यां
म्हारै उण हेत रा
कीं छांटा तो लाग्या हुसी थारै
जकौ निकळ्यौ हौ
म्हारी आँख्यां सूं।
तू म्हनै याद नीं आवै
क्यूं के तू म्हनै
याद ई'ज रैवै।
तू बणजा
गोळ मटोळ फूटरौ सो

चंदरमा
अर म्हारै डागळै रै
ऊपर आय'र
थारै अपार खजानै सूं
म्हनै दे जा फगत
मुट्ठी भर उजियाळौ।

मुट्ठी भर उजियाळौ (३)

घुप्प अंधारै में
डूब्यौ एक सैर
ताकतौ उम्मीद सूं
आभै खांनी
सोधतो
आपरै खातर
कोई सूरज।

याथा आदम रै जुग री
बूढी इमारतां री
भींत्यां री सेर्‌यां में
ऊग्योड़ा
आक रा पौधा
अडीकै भींत्यां रै
आर फाटण नै।

निजर बचाय
खिसकणै री फिराक में
चंदरमा
देय जावै
मुट्ठी भर उजियाळौ।

अधाणचक
चुंधियाय जावै
अंधारै सैर री आँख्या
हडबड़ा जावै
सूरज सूरज करतौ सैर।

शिव या शव

म्हारी आत्मा
तू म्हनै
सुण सकै तो सुण
म्हैं एक डील हूँ।
थारौ अर म्हारौ नातौ
इण सिस्टी सूं भी
कीं पैला री है
पण ठा नीं क्यूं
तू बदळती रैवै
थारे खोळियौ
वार वार
घणी वार, अर
खिड़क्यां पर रै जावै
थारै हाथां सूं माण्ड्योड़ा
वीं शरीरां रा नांव
वठै, सायत म्हैं कोनी
अर हुवणौ भी नीं चावूं।
म्हैं तो फगत
आ चावूं
के तू म्हारे मांय
कविता बण'र
म्हारी नस नस में वैव
अर स्वर बण'र
म्हारै रूं रूं में गूंज।
म्हारी आत्मा
अबकी बार मत होईजे

अळगी थारै
इण शरीर सूं
तू तो जाणें ई'ज है
के आत्मा-शरीर मिलै
तो वणै एक शिव।
आत्मा अर शरीर
जद हुय जावै
एक दूजै सूं दूर
तो वणै शव।
अबै तू ही सोच
तू म्हनै कीं रूप में
देखणी चावै?
शिव या शव

तू अर म्हैं

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
बीज गणित रै
किणी उलझ्योड़े
सवाल री भांत
जिण नै म्हैं
घणी ताळ सूं कर रह्यी हूँ
सुळझावण री कोशिश।

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
किणी अणजाणी भासा रै
एक सबद री भांत
अर म्हैं
म्हैं सुनसान
अर सरणाटै पुस्तकालय में
किताब्यां रै ढेर में बैठ्यी
सोध रह्यी हूँ थारी अरथ।

कदे कदे
तू लागै है म्हनै
एक उफणतै समदर री
एक लैर री भांत
अर म्हैं एक किनारौ
कणै तू म्हारै
घणी नैड़ौ
कणै ई खासी दूर।

तू आभो

तू एक आगता सी
मालम आवी
घणी लाम्बी मगरी
आपूणी पैमाण निपोली
जठीनै देखां
बठीनै तू, फगत तू
म्हैं थनै देख देखनै
फागी आपूणी
आज भी तुबे
घणी इचरज
के इतरी बडी भीज नै
बणावण आळी
आप कितरी बडी हुसी
कुण जाणे?

आँख्यां सूं छळकै

हेत किणी री
बण के पाणी
आँख्यां सूं छळकै।
नैणां रा सुपना
मुरझावै
जागी रात्यां
नींद न आवै
याद किणी री
आँसू बण के
आँख्यां सूं छळकै।
दुखती मन अर
थकती काया
बीत्या दिन क्यूं
फेर न आया
बात किणी री
बण के पाणी
आँख्या सूं छळकै।
सरणाटो सब
ओर लखावै
मन ने कोई
चीज न भावै
दूर किणी सूं
हुवणै री दुख
आँख्या सू छळकै।

थारी ओळूं आवै

म्हारै मन रा मीत
म्हारी प्रीत
म्हारी आत्मा पर
जुगां जुगां मांई
मण्डयोड़ी म्हारी
थारा बोल
थारी बात
थारी सोच
थारो साथ
मैं परता परस भूल नी पाऊंला
अर जद जद भी
इण दुनिया में आऊंला
म्हारै रच्योड़ा गीत
थारै मन में जरूर गुंजाऊंला।
म्हारै अन्तस रा उजास
जद म्हनै थारी ओळूं आवै
तो म्हारै नैणां सूं छळकै जळ
अर मन में हुवै
कसमसाट
थारै सूं मिलणै री
उण वखत मन नै
समझावण सारु
उठा उठा'र देखूं

थारी सैनाण्या
थारी निशाण्यां
अर होठां सूं लगा लू
उण सब ने
एक एक कर।

मिलाण

म जाणो कद?
म्है जाणतो भूल नीं जावै तूं
थनै आदर साईं
थारी परछाईं
म्हारी छाया बण'र
म्हारै लारै लारै हैडै।

थनै देखण सूं
म्हनै मिळै
एक सगती
दिन मांही दिन
धिकावण सारु।

तूं नीं मानैला
म्हैं राजी कोनी
आपणै आप सूं
म्हैं खुद नै देखूं गजा
थारै सूं रूसणै री

तूं नैणां में
गैराई लेय
धरती पर चालै
म्हैं आँख्यां में
ऊँचाई लेय आभै में उडूं।
घणी लाम्बी फासलौ है
थारै अर म्हारै बिचाळै

तू नीं छोड़ सकै
आपरी जमीन
ना उतर सकूं म्हैं
म्हारै आसमान सूं नीचै।
पण इण में
पछतावै री बात कोनी
आपां दोनूं जाणां
के जमीन आसमान
री मिलाण
कदे नीं होवै।

आर्ट

म्हैं ताश खेलणों
नीं जाणूं, पण
यां रै लारै मण्डयोड़ा
रंग विरंगा फोटू
म्हनै घणा भावै।
म्हनै ठा नीं पड़ै
के कुण है बादशाह
कूण बेगम
कूण है चिड़ी
अर किसो जोकर।
पण, एक बात है
ताश रौ घर म्हैं
सांतरो बणावूं
सगळा पत्ता जोड़'र
ऊँचो घर।
घर में सब रै सागै
बादशाह अर
बेगम भी हुवै
पण फेर भी
ओ घर
हवा रै एक झी'ज
लैरकै सूं
खड़खड़ाय
आय पड़ै नीचै
अर बिखर जावै
सगळा पत्ता
लोप हुय जावै

बादशाह अर बीं रै महल।
पत्ता री ढिगली
म्हारै आंगणै में
बिखर जावै बेतरतीब
इयां लागै जाणै
कैनवास माथै
ऊंधी-सूंधी
आडी-तिरछी
बुरस मार'र
बणायोड़ी हुवै कोई
'मॉडर्न आर्ट' रौ नमूनौ।

सतरंगी काया

गती हुयोड़ी आख्यां
पीळी झुळक मूंडी
थखत सूं पैली
काळारी गमायोड़ा
धौळा केस
घामडी रै मांय सूं
झाकै घालती
हरी टांच नाड़यां
आख्यां नीचै फैल्योडी
बैंगणी अमूझी
अर डोळां रै
आसै पासै तिरता
गुलाबी डोरा
ऐड़ै गैड़ै लैगयती
काळमस
म्हैं मानग्यो
सांच कैवै है लोग
के जीवन है
सतरंगी इंद्रधनुष।

आफरीज्योड़ी पून

म्हैं म्हारै घरा रा
बारी बाण्डा
गोखा किवाड
रै बन्द करणा चाऊँ
पण कर नीं पा रह्यौ हूँ।

बारली आफरी चढ्योड़ी
पून म्हारै घर रै
धोरी मवडै रा
चूळिया हिलावै
जद आडी नीं खुलै तो
सेड्‌यां मांय कर आवै।

इण हवा ने
घर में आवण सूं रोकणी
घणी जरूरी है
नीं तो कीं नीं बचैली
म्हारै इण मिन्दर जिसै घर में
साळ में लागोड़ी
सुरसत मां री फोटू
आय पड़ैली नीचै अर
आळै में पड़ी
दादोसा रै हाथ री
गीता अर रामायण री
हुय जासी
पानौ पानौ अळगी

टूट जासी आगणै में
लागोड़ी तुळछी जी रै
नान्को सो पौधो
बुझ जासी मिन्दर में
ठाकुर जी रै दीपक
उजड़ जासी
म्हारै तन रा गाभा
हवा रै साथै आयोड़ी खरच में
पिछाण कियां करसूं
म्हैं म्हारी मां, बैन
बेटी, भाई अर जोरा री

लोप हुय जासी
घर री गैरी शांति
इण विकराळ हवा रै आगै सूं
जकी जीसा रै
मिन्दर में रोज
पाठ रणै सूं थरपीजी है।
ओजूं तांई
भचीड़ै है हवा
म्हारा बाण्डा पूरै वेग सूं
पण म्हनै
बचाणी है म्हारी घर
ई पून रै हमलै सूं
बचाणी है
घर री मान मरजाद।

सुभाव

'जलम देय'र
वडौ करणौ
अर फेर काट देवणौ
या पगां सूं किचरणौ
मिनख रौ
ओ ई सुभाव
उण ने बणावै
सैं जीवां सूं अळगौ'

बाग री नान्ही दूब
रोवती, गरळांवती
इतरौ कैयौ ई'ज हौ के
अचाणचक
एक पग
उण री कधरी काढ़
आगै बधग्यो
दूब बापड़ी
अवै नीं रैयी
रोवण जोगी भी।

पाणी अर पत्थर

जद कदे भी देखूं हूँ
म्हारै गांव री पाळ पर पडिया
ऊँधा-सीधा
आडा-तिरछा भाटा नै
जिण री एक दूजै सूं
कीं रिश्तौ
कोई जुड़ाव
जोया नीं लाधै।

पाणी री एक बूंद पर
दूजी बंद न्हांखी
दोनूं रिळमिळ'र
बणगी पाणी री
एक नूवी बूंद।

कदे कदे सोचूं
पाणी रै टोपै ज्यूं
भाटै नै भी आवती
रिळमिळ'र एक हुवणी तो
कित्तरी आछी हुवती।

बदळाव

म्हारै बाग रा फूल
लारलै लाम्बै वखत सूं
फगत खिलण री
लीक पीट रह्या है।

म्हारै बाग में
आजकल
काची कळ्यां नीं हुवै
डाळी सूं निकळै
पूरो री पूरो फूल।

अठै रा
'सूरजमुखी अबै
सूरज रै
आणै जाणै री
'टेंशन' नीं पाळै।

अठै री
छुई मुई री तो
कैवणी ही क्या
इण नै छूवौ तो छूवौ
दोनूं हाथां सूं झाललो
वा शरम सूं
भेळी नी हुवै।

बदळाव

म्हारे बाग रा फूल
लारलै लाम्बै वखत सूं
फगत खिलण री
लीक पीट रह्या है।

म्हारे बाग में
आजकल
काची कळ्यां नीं हुवै
डाळी सूं निकळै
पूरौ रौ पूरौ फूल।

अठै रा
सूरजमुखी अवै
सूरज रै
आणै जाणै री
'टेंशन' नीं पाळै।

अठै री
छुई मुई री तो
कैयणी ही क्या
इण ने छूवौ तो छूवौ
दोनूं हाथां सूं झाललो
वा शरम सूं
मेळी नी हुवै।

भंवरै री गूंजणी
अर कोयल री कूक
जाणें चीरादृया वणगी है।
मैं नित री देखूं
के हरेक दिरखत
आपरी जड़ा
फैलायण सारू
लागोड़ी है
दूजां री जड़ा काटण में।
दिनूगै
चिड़ूयां, कमेड़ूयां
मोर पपैयां ने
नीं वच्यौ है
फालतू वखत
भोर री सुवागत करण खातर।
म्हारी मन कळपीजै
विना खसबू रा फूल देख
अळसीजियोड़ी पत्यां देख
हर डाळी ने आपरै मायं
मरत देख
पीळै पत्तां रा हौंसला
पस्त देख।
म्हारी जी धमटीजै
कोयल री
मांग लायोड़ी बोली सूं
म्हैं राजी कोनी
उधार लायोड़ी
हरियाळी सूं
म्हनै दाय नी आवै
हर डाळी री

खुद ने
पूरौ पेड़ समझणौ
ठीक नीं लागै
म्हनै वेल्यां री
विना नीचै देख्यां
ऊपर चढ़णौ।
म्हनै घणौ
घणौ अखरै
बाग में
हरेक री
आप मतै चालणौ।

जूता

फेंक दिया है उठा'र
घर रै पिछोकड़ै में
कचरै रै सागै
वै काळिया जूता
जका काल तांई
पगां सूं भी
बेसी कीमती हा
चमचम करता
आळै में धरीजता
जतनां सूं
आज वै बेकार है
कचरौ है
आपरी सौं कीं
दे चुकणै रै बाद।

चानणो

घणी ताळ जद
अंधारै मारग
कोई नीं आयौ
तो झूंपड़ी रै आगै
लटक्योड़ै
लालटेण ने लखायौ
'म्हैं वेकार में ही
तेज पून सूं
माथौ लगाऊ
अठीनै कोई नीं आवै
किण ने रस्तौ दिखाऊँ
जकौ भी इण जंगळ
आधी रात में आवैला
उण रै मन में
चानणो तो
पैली सूं ही हुवैला'
हवा री लैरकी आयी
घप्प........
लालटेण वुझग्यी।

कीं चितराम

कदे कदे
जीवन में आवै
इण भांत रा दिन
जद लागै
के जाणें
राम जी ले रह्या हुवै
सीता माँ री
अगन परीक्षा
वार-वार।

वन में तिरसौ मिरग
पाणी सोधती सोधती
निढ़ाळ होय
इसी पड़ै
के फेर वो
कदे नीं सोधै पाणी।

भोरान भोर
मजूरी खातर
निसर्‌यौ मिनख
रिंज्या ने पूठो आवै
जूत्यां ने आधी कर'र
अर सोय जावै
पाणी रौ गुटकौ पीर'र
दूजै दिन रौ आस पर।

झूंपड़ी में
मांचै पर पड़्यौ
ताव सूं वळतौ डील
दवायां नै
अडीकतौ अडीकतौ
छोड़ जावै
ओ नश्वर संसार।

कच्ची बस्ती में
लीरिया पूरिया बांध'र
चणायोड़ी एक टापरी
खाडा कोचरां सूं निसरतौ
चूलड़ी रौ धूंवौ
अर, काटीजियोड़ै टीण री
छजयाळ माथै पड़ियै
रेडियै सूं बाजतौ गीत
'इक बंगला बने न्यारा'।

'हटके'

म्हारै बखत रा लोग
पढ़्योड़ा लिख्योड़ा
डेढ़ हुसियार
सब रा सब
बणना चावै
भीड़ सूं न्यारा
करणी चावै
'कुछ हटके'
मैं बैठ्यो हूँ
एक पुस्तकालय में
इत्तां मिनखां थकै
पसर्‌योड़ो है
सचेत सरणाटो।

सब बांच रह्या है
बिना छपीं
सादै कागदां री
किताब्यां
बड़े मन चित्त सूं।

अहिंसा

संसद रै बा'र
लाग्योड़ी
गांधी बुद्ध
अर महावीर री
मूरत्यां देवै
अहिंसा रौ संदेश।

सदन रै मांय
जाणै रै बाद
कीं भी करसका आपां
कुण देखै?

म्हनै जावण दे

जावण दे म्हनै पूठौ
कठैई गूंगी अर बोळी नीं कर देवै
म्हारी संवेदनावां नै
अठै री चीखती जिनगाणी
कठै मिटा नीं देवै
म्हारै मन री धड़कन नै
अठै री कानफाडू
दौड़ती भागती झाकौ
कठै म्हूं भी एक
मसीन बण'र नीं रैय जावूं
थारै इण मसीनी सैर मांय।

जावण दे म्हनै
म्हैं थनै
यठै नीं लेय जावूंला।
क्यूं के यठै री
भारतीय रूप
थनै गंवार लागसी
खेतां में वैंवती
अलमस्त पून
थनै दाय नीं आवैला
यठै री सोनलिया झांझरकौ,
मतवाळी भोर
थनै निठल्लै जीवन री

ऐसास करावैला
और तो और
दोपारै नीमड़ै री छियां में
थनै बाजरी री रोटी
अर कांदा
दाय नीं आवैला।

तू अठै रौ है
अठै रौ ही रै
बठै थारै कानां में
'एफ. एम' पर बाजतौ
'पॉप' अर 'रैप'
'यी' अर 'एम टी.वी.' री हुल्लड़
नीं पड़सी तो जाणें
थारौ तो
जीवणौ ही कीयां हुसी।

कम्प्यूटर री वेबसाइटां
अणगिण गाड्यां री
रेलमपेल बिना
थनै जीवन बेकार लागसी।
नीं भायला
तू अठै ही रै
अर म्हनै जावण दे।

जे म्हैं अठै रैयौ तो
वेचणी पड़सी
म्हनै म्हारी आत्मा
भूलणी पड़सी
म्हनै म्हारी संस्कृति
नोचणा पड़सी
सैंग रिश्तां नातां रा अरथ
ताक पर राखणी पड़सी

म्हने म्हारी मिनखापणी
अर बोलणी पड़सी
उधार री बोली
बणनी पड़सी
एक जीवती जागती भाठौ।
ना भायला
म्हैं अठे रैवण री
इत्ती मोटी रकम
नीं चुका सकूं।
म्हैं जा रह्यौ हूँ
म्हारै गांव।

म्हारौ गांव

कितरो सोवणौ
अर मन भावणौ लागै
भोरान भोर
माँ री आंगण बुहारणौ
अर भाभीसा री
तुळसी सींचते सींचते
मधरै मधरै सुर में
भजन गावणौ।
घणौ आछौ लागै
सानी खावतां
बळधां रै गळै री
नान्ही नान्ही घंटूयां री बाजणी
अर दुहारी खातर त्यार
गायां री रंभावणौ
कितरी मीठी लागै
बकरूयां अर मेमनां री
मिमियाती बोली
अर पिणघट माथै
हथाई करती
छोरूयां री हंसी
अर वां रै

मूण्डै सू रचीजती
जीयन री अनलिखी काण्यां
गांय री इण भोर ने
भोर रै चितराम ने देखौ
देखौ अर जीवौ।

गांव ही रैवै

राम करै
म्हारो गांव
गांव ही रैवै।

खेतां में धान रैवै
ममता री मान रैवै
अलगूंजा गूंजै तो
होठां में तान रैवै।
बापू री ग्याड़ी री
पंचां में मान रैवै

राम करै
म्हारो गांव
गांव ही रैवै।

गवरल सी भाभी
ईसर सा भैया
बाखळ में बैल भैंस
ऊँट और गैया
जेठ री दुपहरियां में
पीपळ री छांव रैवै

राम करै
म्हारो गांव
गांव ही रैवै।

म्हारौ सैर

म्हारलै सैर में
धरम रै नांव
लोई नीं वैवाइजै
हंसता खेलता घर
नीं उजाड़ीजै।

म्हारै सैर में
हवा में गूंजती अजान
अर तिरता भजन
अडीक राखै
एक दूसरै री
अर कदे कदे तो
रिळमिळ'र हुय जावै
एकाकार।

म्हे सिंग्या री
अजान सुण'र करां
मिन्दर में दीया बत्ती।
माथै ने खाली कर'र
आ कदे
म्हारलै सैर।

खांचा

एक खांचादार
मोटी अलमारी ज्यूं
हुवती जाय रैयी है
म्हारी सैर।

हर आदमी
वड़ वड़'र वैठ रहयो है
आप आप रै खांचे मांय
आ सोच'र
के अबै नीं निकळणो है
म्हनै म्हारै
खांचै ने छोड'र।

म्हनै लखावै
खांचा में वैठां मिनखा रै
मन में भी
पड़ रहया है
सायत केई खांचा।

दिन अर रात्यां

बीते दिन अर बीते रात्यां
कुण पूछै मनड़ै री यात्यां।

मन फंस जावै मकड जाळ में
खूब करै तड़फातोड़ी
पल पल छिण छिण घटै जिन्दगी
सांस घटै थोड़ी थोड़ी

डरूँ फरूँ सा दिन हुय जावै
हांफीज्योड़ी सूवै रात्यां।

ओजीसाळी अयखायां री
उम्मीदां जद ठोकर खावै
पळक्यां जिण री करै बगावत
उण ऑख्यां नै नींद न आवै

काळूंठी सो दिन लागै अर
धौळी धौळी लागै रात्यां।

बैरी बणै बदन री कपड़ी
जाण बूझ पग टेढ़ा घालै
करै आंगळ्यां आ कुचमादी
खुद री काया गोभा घालै

पीडा भोगी दिन हुय जावै
मरै सिसकती नित री रात्यां।

पखेरु

उडती पखेरू आसमान में
तिणका चूंच दबाए
नीड़ बणावूं आभै ऊपर
आगै बधती जाए।

च्यारूँ दिशावां खुली हुई है।
किण नै जाऊँ
समझ न आए
सोचै है पण, रुकै नहीं यो
उडती पंख फैलाए।

मन में जोश लैरका लेवै
आँख्यां में कीं
सुपना तैरे
पून रै सागै ऊँचाई पर
उडती आस लगाए।

नीं सीख्यी थकणी अर थमणी
बाधा आए
चलती जाए
बिना थक्यां पंछीड़ी चालै
रात हुवै दिन आए।

चाल मुसाफिर

चाल मुसाफिर मारग खोजां
सोच मती तू रुकणै की
आगै वध जा पीछे मत मुड़
वात मती कर थमणै की।

हिरदै में विश्वास थरपलै
कुछ ना कुछ तो पाणी है
जग में ईश्वर भेज्या है तो
कुछ ना कुछ कर जाणी है
मन में इच्छावां पैदा कर
सोच बहुत कुछ करणै की।

चाल मुसाफिर मारग खोजां
रस्तै बीच रुकावट आसी
बाधा आसी पग पग में
बिन कुछ करियां गया जगत सूं
तो क्यूं आया इण जग में
जद तक थारी ठौड न आवै
सोच मती तू थमणैं की।
चाल मुसाफिर मारग खोजां

तेज पून सूं लड़ै है दिवली
फेर भी वो हारै कोनी
जकै काळजै हिम्मत होवै
वो अबखायाँ धारै कोनी
तू दिवली बण मिटा अंधेरो
सोच मती तू बुझणैं की।
आगै वध जा पीछे मत मुड़
वात मती कर थमणै की।

फौजी

सात सलामां उण माता ने
जिण फौजीने जायौ
एक शहीद री कथा सुणी तो
आँख में पाणी आयौ।

घर में शादी ब्यांव हुयौ चायै
नूवीं बीनणी आवै
घर रा रिश्ता राख किनारै
सीमा पर डट जावै।

फौजी भूलै भूख प्यास ने
मन में नहीं कोई इच्छा
ओ तन इण धरती ने देवूं
करूँ देश री रक्षा।

आगै बधतौ कदम बढ़ातौ
सिंह सरीखौ गाजै
दुश्मन अपणा ढोला पिटया
भेळा कर कर भाजै।

राई जितरी धरती खातर
तन सूं लोई वैयावै
हाथां में हथगोळी ले
दुश्मन खांनी बध जावै।

दुश्मी री सजियोडी सेना
इक पळ में विखरावै
शत्रु पीठ दिखावै भागै
मन ही मन घबरावै।

गोळ्यां सूं वींधीजै काया
माता री गोदी सूवै
आँख्यां नै मीचण सूं पैली
वेटी मां नै कैवै।

तू माता म्हैं लाल हूँ थारौ
जलम जलम रौ नातौ
नेच्चौ हुंवतौ, वेसी थारी
सेवा म्हैं कर पातौ।

इतरौ कै अर आँख्यां मीची
काम देश रै आयौ
उण रै मन में ध्यावता ही के
जलम सफळ वण पायौ।